# वर्तमान कालिक वैश्विक परिदृश्य में भारतीय नई शिक्षा नीति की प्रांसगिकता

*डॉ. हसंराज शर्मा

**प्रस्तावनाः–**

मनुष्य के जीवन में जितना महत्त्व भोजन, कपड़े, और आवास का है, उससे कहीं अधिक महत्त्व शिक्षा का है इसीलिए हमेशा ये ही कहा जाता है कि शिक्षा का मानव जीवन में बहुत महत्त्व है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे मनुष्य में ज्ञान का प्रसार होता है। इंसान की बुद्धि का विकास शिक्षा अर्जित करने से ही होता है। शिक्षा मानव जीवन की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है।

स्वामी विवेकानंद कहते हैं "शिक्षा मनुष्य को देवत्व प्रदान करती है।" पाठ्यक्रम का अर्थ संकुचित ना होकर व्यापक होना चाहिए। उन्हें उनके अधिकारों तथा राष्ट्र के प्रति कर्तव्य से अवगत कराया जाना चाहिए। जिससे उन्हें प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र सेवा की भावना जागृत हो।

स्वामी विवेकानंद जी के शब्दों में" मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। "अपनी शक्तियों का जीवन से समन्वय स्थापित कर राष्ट्र के सामाजिक आर्थिक विकास तथा राष्ट्र कल्याण शिक्षा कुंजी है।

शिक्षा की परिभाषा बहुत व्यापक है। नॉलेज, सही व्यवहार, टेक्निकल स्किल्स, विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को शिक्षा कहते हैं। शिक्षा में नॉलेज, सही व्यवहार, टेक्निकल स्किल्स, टीचिंग और विद्या प्राप्ति आदि शामिल हैं। इस प्रकार यह स्किल्स, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और एस्थेटिक के उत्कर्ष पर केंद्रित है।

शिक्षा वर्तमान तथा भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन है। शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान कहा जाता है। देश के आजादी के बाद देश के प्रत्येक नागरिक को साक्षर बनाने का अभियान चलाया गया है। उसमें नई शिक्षा नीतियों को जोड़ा गया है। भारत शुरू से ही समर्थ देश रहा है। भारत को सोने की चिड़िया धन संपदा के कारण कहा जाता है। भारत में संकुचित राष्ट्रीयता का फायदा उठाकर यूरोपीय व्यापारियों ने भारत में अपना व्यापार के साथ धर्म का प्रचार– प्रसार किया। भारत में शिक्षा का आरंभ अदिकाल से रहा है, किंतु लोगों का भ्रम है कि शिक्षा का सूत्रपात अंग्रेजी राज के कारण हुआ। अदिकाल में गुरुकुल पाठशाला विद्यालय आदि के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जाती थी। नालंदा विश्वविद्यालय तक्षशिला आदि उनके मुख्य उदाहरण है। प्राचीन भारत में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मुक्ति चाह रही है। बाद में जरूरतों के बदलने और समाज विकास से आए जटिलताओं से शिक्षा के उद्देश्य बदलते गए।

**नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की आवश्यकताः–**

अब तक शिक्षा प्रणाली व्हाट टू थिंक पर आधारित थी। जबकि नई शिक्षा प्रणाली में हाउ टू थिंक पर बल दिया जा रहा है। इसमें लक्ष्य रोजगार मांगने वालों की जगह रोजगार देने वालों को तैयार करना और देश की शिक्षा प्रणाली के प्रयोजन तथा विषय वस्तु में परिवर्तन का प्रयास करना है। यह नई शिक्षा प्रणाली सिर्फ एक नीतिगत दस्तावेज

नहीं है बल्कि पूर्ण भारतीयों की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है। बच्चों को खाली डिग्रियों अंबार नहीं उभारने है। जैसे किसी बच्चे को इसी विषय में दिलचस्पी नहीं होती, मगर अपने माता–पिता रिश्तेदार और दोस्तों के दबाव में विषय पढ़ना पड़ता है। यह तो अपने आप में अधूरापन और इस तस्वीर को बदलने का प्रयास है।

भारतीय नई शिक्षा नीति २१ वी शताब्दी की आवश्यकता है। अनुकूल स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र लचीला बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और वैश्विक महाशक्ति में बदलकर प्रत्येक छात्र में निहित अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाना है।

नई शिक्षा नीति का लक्ष्य भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना। यह नई शिक्षा नीति उन्हें सामने रखकर ही बनाई है। शिक्षा नीति शिक्षा में ज्ञान उचित आचरण और तकनीकी दक्षता शिक्षण और विद्या प्राप्त है साथ ही व्यापार या व्यवसाय एवं मानसिक नैतिक और सौंदर्य विषय पर केंद्रित है।

प्राचीन काल से ही भारत शिक्षा के महत्व के प्रति विशेष जागरूक रहा है। वैदिक युग से गुरुकुल में पीढ़ी दर पीढ़ी से शिक्षा प्रदान की जा रही है। शिक्षा एक व्यक्ति को अपनी क्षमता का पता लगाने में मदद करती है। जो बदले में एक मजबूत और एकजुट समाज को बढ़ावा देती है। नई शिक्षा नीति ब्रिटिश विरासत को दूर करेगी और विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित करेगी। भारत के शक्ति अब अपने आप में एक वैश्विक शक्ति है। यह नीति शिक्षा में परिवर्तन की दिशा में चिंतन है एवं विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य है।

आधुनिक शिक्षा पद्धति अंग्रेजी राज्य की देन है। भारतेंदु हरिश्चंद्र भारत दुर्दशा में कहते हैं", देखो विद्या का सूरज पश्चिम से उदय हुआ चल आता है। "बदलते वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए भारतीय शिक्षण व्यवस्था की वैश्विक स्तर पर पहुंच सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा नीति में परिवर्तन की आवश्यकता थी। जीवन में शिक्षा के महत्व को देखते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वर्तमान सरकार ने शिक्षा में व्यापक बदलाव के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को बनाया गया है।

**वर्तमानकालिक वैश्विक परिदृश्य में भारतीय नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता–**

वर्तमान कालिक हमारा शिक्षण तीन स्तरों में विभाजित हुआ दिखाई देता है। बोध स्तर, स्मृति स्तर, और चिंतन स्तर। छात्र विषय वस्तु को आत्मसात करके छात्राओं की सहभागिता बनाकर उनमें आलोचनात्मक तथा मौलिक चिंतन उत्पन्न करना नई शिक्षा प्रणाली का ध्येय रहा है एवं वैश्वीकरण के कारण पूरी आबादी को समस्त विधाओं में गुणवत्ता परक काल परिस्थितियों के अनुरूप वांछित विधान में समग्र शिक्षा प्रदान करना शिक्षा की सभी विधाओं की समाज निर्माण में अपनी विशेष भूमिका होती है।

वर्तमान मानव सभ्यता के विकास में विज्ञान व प्रौद्योगिकी का विशेषता होने के दृष्टिगत तकनीकी शिक्षा पर सबकी नजर होना स्वभाविक है। नई शिक्षा प्रणाली में अपनी बहुत संख्या में युवा आबादी के चलते भारत मानव सभ्यता के उन्नयन के लिए विज्ञान व प्रौद्योगिकी के माध्यम से संधारण विकास के लिए कटिबद्ध कराने की उम्मीद है।

छात्र–छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नवाचार और अनुसंधान संबंधी आवश्यकताओं के बदलते परिदृश्य का सामना करने के लिए इसका नवनिर्माण है। नई विश्व व्यवस्था नया ग्लोबल स्टैंडर्ड तय हो रहा है। 21वीं सदी के भारत से पूरे विश्व को बहुत अपेक्षाएं हैं। भारत का सामर्थ्य है कि वह बौद्धिकता और प्रौद्योगिकी का समाधान पूरी दुनिया को देख सकता है। और इस जिम्मेदारी पर भी नई नीति में केंद्रित किया गया है।

यह नई शिक्षा नीति समाज के आखिरी छोर पर खड़े छात्र तक पहुंच सकती है। कल्पना शक्ति की बढ़ावा देती है।

हमें हमारे छात्राओं को ग्लोबल सिटीजन तो बनाना है, इसका भी ध्यान रखना है कि वह इसके साथ अपने जड़ों से भी जुड़े रहे जड़ से जब तक मनुष्य मानवता तक अतीत से आधुनिकता तक सभी बिंदुओं का समावेश करते हुए इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्वरूप तय किया गया है। हर विद्यार्थी को यह अवसर मिलना ही चाहिए कि वह अपनी रुचि के हिसाब से चले अपनी सुविधा और जरूरत के हिसाब से चल सके। इस नीति में यही कोशिश रही है कि छात्र को सीखने के लिए जांच परख बहस और विश्लेषण के तरीकों पर जोर दिया जाए इससे बच्चों में सीखने की ललक बढ़े। मकसद को मध्य नजर रखते हुए शिक्षा प्रणाली जरूरी है।

शिक्षा के सम्पूर्ण उद्देश्य की पूर्ति हेतु नई शिक्षा प्रणाली में शिक्षा सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास में साधन बनकर छात्र की मुख्य आवश्यकता हो तथा योग्यताओं की दृष्टि में रखते हुए उसके समक्ष ऐसे अवसर प्रदान करें। उनके आधार पर उसकी मूल प्रवृत्तियां निखर जाए तथा उसकी समस्त शक्तियों एवं गुनों का समुचित विकास होकर वह एक उत्तम व्यक्ति बन जाए। शिक्षा के द्वारा देश और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति व्यवहार व सिद्धांत का संतुलन शिक्षा स्वायत्तता मातृभाषा में शिक्षा व्यापार– व्यवसाय ना होकर सेवा का माध्यम हो।

नई शिक्षा नीति में छात्राओं के बहुमुखी विकास के लिए कल्पनाशील और व्यापक तौर पर शिक्षण व्यवस्था बनाने की पहल होगी। चुने गए विषय और क्षेत्र में विशेषज्ञता पर जोर दिया जाएगा। स्नातक स्तर पर चुने गए विषय में गहनता और विशेषज्ञता पर जोर होगा। भाषाई विविधता को बढ़ावा और संरक्षण इसमें कक्षा पांच तक मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा को अध्यापन के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया।

अब सिर्फ पढ़ाई नहीं बल्कि वर्किंग कल्चर डेवलप किया गया है। स्नातक पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण सुधार किया गया है, 3 या 4 वर्ष के स्नातक कार्यक्रम में छात्र कई स्तरों पर पाठ्यक्रम को छोड़ सकेंगे और उन्हें उसी के अनुरूप डिग्री या प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा। (जैसे– 1 वर्ष के बाद सर्टिफिकेट, 2 वर्ष के बाद एडवांस डिप्लोम 3 वर्ष के बाद स्नातक की डिग्री तथा 4 वर्षों के बाद शोध के साथ स्नातक फिर 1 साल पोस्टग्रेजुएट और 4 साल पीएच. डी.।

नई शिक्षा नीति में शिक्षकों की सुविधा के लिए तकनीक के इस्तेमाल को प्रोत्साहित करने की बात भी नयी शिक्षा नीति करती है। इसके लिए कंप्यूटर, लैपटॉप व मोबाइल फोन इत्यादि के जरिए विभिन्न एप्स का इस्तेमाल करके शिक्षण को रोचक बनाया गया। तकनीक को शिक्षकों के विकल्प के रूप में देखने के बजाय सहायक शिक्षण सामग्री के रूप में देखने का सुझाव दिया गया है। इसके साथ ही अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी भी फोकस किया गया है। शिक्षक के लिए हर साल 50 घंटे की ट्रेनिंग जो नैनोटेक्नोलॉजी, ऑटोमेशन मिशन, लर्निंग और अंतरिक्ष विज्ञान जैसे अनेक विषयों में रहेगी।

यह नई शिक्षा नीति अधिगम्यता, निष्पक्षता, गुणवत्ता वहनीयता जवाबदेही आधारभूत संरचना के आधार पर तैयार की गई है। नई शिक्षा नीति जहां छात्रों की प्रतिभा की और अधिक निखार कर बेहतर बनाने के उपाय लेकर आई है। वही इसमें शिक्षकों को प्रशिक्षण भी खास व्यवस्था की गई है, ताकि आदर्श शिक्षक हो और उनके द्वारा बनाए गए छात्रों में भी अच्छे सामाजिक संस्कार देखने को मिले। रटटा लगाने की बजाय छात्र के विषय के मूल ज्ञान की टेस्ट को लक्ष्य बनाया गया।

यह नई शिक्षा नीति मानव जीवन को अलौकिक करने, उसे सशक्त बनाने, अंधकारों और बंधनों से मुक्त करने, मार्ग प्रशस्त करने में पूर्णतः समर्थ है। बच्चों कों पढ़ते समय हमेशा याद रहेगा कि हमें एक अच्छा नागरिक बनकर, समाज का जिम्मेदार हिस्सा बनकर राष्ट्र का नेतृत्व निर्माण गुण इस नई शिक्षा नीति में समाविष्ट किया गया है।

नई शिक्षा नीति लागू करने के पीछे अनेक उद्देश्य हैं, जो भारत की शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा के ढांचे में सुधार लाता

है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख उद्देश्य एनईसी की स्थापना,शिक्षा में सार्वजनिक निवेश बढ़ाना, प्रौद्योगिकी के उपयोग को सुदृढ़ बनाना। व्यावसायिक और प्रौढ़ शिक्षा पर अधिक ध्यान देना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्कूल और उच्च शिक्षा में छात्रों की मदद करने के लिए आवश्यक सुधार प्रदान करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य प्रारंभिक बचपन की देखभाल, शिक्षक प्रशिक्षण को मजबूत करना, मौजूदा परीक्षा प्रणाली में सुधार और शिक्षा के सुधार ढांचे में सुधार जैसे आवश्यक क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्थायी शिक्षा प्रणाली के समक्ष आने वाली चुनौतियों का समाधान करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषताएं सामर्थ्य, गुणवत्ता, पहुँच, हिस्सेदारी, जवाबदेही है।

**उच्च शिक्षण संस्थानों की नियामक संरचना और प्रत्यायन–**

उच्च शिक्षण संस्थानों के नियामक ढांचे और प्रत्यायन के लिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने निम्नलिखित परिवर्तनों का सुझाव दिया है–

राष्ट्रीय मूल्यांकन प्रत्यायन को यू.जी.सी से अलग और स्वतंत्र निकाय में स्थापित करना।

राष्ट्रीय उच्च शिक्षा नियामक प्राधिकरण (एनएचईआरए) की स्थापना।

नई शिक्षा नीति की प्रमुख सिफारिशों में से एक शिक्षा में सार्वजनिक निवेश को बढ़ाना (लगभग दोगुना) था। इसका लक्ष्य शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत खर्च करना है।

**व्यावसायिक पाठ्यक्रम–**

नई शिक्षा नीति में कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों के लिए व्यावसायिक शिक्षा की शुरूआत पर जोर दिया गया है। सभी स्कूलों को एनएसक्यूएफ (राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क) योग्यता स्तरों के साथ गठबंधन एक विशेषज्ञ पाठ्यक्रम विकसित करना चाहिए। यह न केवल स्कूलों का कर्तव्य है बल्कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को स्नातक शिक्षा कार्यक्रमों और उच्च शिक्षा संस्थानों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाना चाहिए।

**तीन भाषा सूत्र**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति त्रिभाषा सूत्र के विचार का समर्थन करती है। त्रिभाषा सूत्र के अनुसार, राज्य सरकार को हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी और अंग्रेजी के अलावा आधुनिक भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए। उन्हें एक दक्षिणी भाषा पसंद करने की जरूरत है। गैर–हिंदी भाषी राज्य हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषा का विकल्प चुन सकते हैं।

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भविष्य में निम्नलिखित परिणामों के लिए है–**

नई शिक्षा नीति 2025 तक राष्ट्रीय मिशन के माध्यम से मूलभूत शिक्षा और संख्यात्मक कौशल हासिल करना चाहता है। इसका उद्देश्य 10 वर्षों के भीतर ईसीसीई से एसडीजी 4 के साथ माध्यमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना है। इसका उद्देश्य 2030 तक शिक्षकों को मूल्यांकन सुधारों के लिए तैयार करना है।नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 2030 तक एक समान और समावेशी शिक्षा प्रणाली को लागू करना है। आगामी वर्षों में प्री–स्कूल से माध्यमिक स्तर तक सकल नामांकन अनुपात को 100 प्रतिशत तक लाना।

नई शिक्षा नीति गुणवत्ता, समानता, वहनीयता, जवाबदेही और पहुंच की चुनौतियों के खिलाफ काम करती है जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार कर भारत में शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को बढ़वा देती है ।

इस प्रकार वर्तमान कालिक वैश्विक परिदृश्य में भारतीय नई शिक्षा नीति की पूर्ण रुप से प्रासंगिकता सिद्ध होती है।

***सहायक आचार्य**
**ज्योतिष**
**राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, दौसा (राज.)**

**संदर्भ सूची**

1. National Education Policy 2020: The Key to Development in India
   (DR. KESHAB CHANDRA MANDAL)
2. NEP 2020- At a Glance For Educators: Towards Exxcellence
   (DR. DHEERAJ MEHROTRA)
3. National Education Policy (NEP)2020, And The Role of Teachers
   (AKANKSHA SHRIVASTAV & NISHI TYAGI)
4. The Perspective of india`s National Education Policy 2020
   (RANJIT SINGHA & SURJIT SINGHA)
5. National Education Policy 2020: Concepts, Approaches and Challenges
   (Lalima Singh, Harsh Kumar Singh, Anuradha Singh)
6. भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
   (डॉ. जोसफ के थॉमस)